'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2018-20
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 22 अंक 5 19 मई 2018 कुल पृष्ठः 8 एक प्रतिः रुपए 7.00 वार्षिक : रुपए 150/-

'जीवन का सदुपयोग कर दुनियां को अनुपम भेंट दें'

बाड़मेर में उच्च प्रशिक्षण शिविर प्रारम्भ

हमें देवताओं के लिए भी दुर्लभ मनुष्य जीवन मिला, भगवान ने कृपापूर्वक क्षत्रिय कुल में जन्म दिया एवं फिर श्री क्षत्रिय युवक संघ का शिविर करने का अवसर मिला। ये सब विशेषताएं गफलत में बिताने के लिए नहीं हैं बल्कि सदुपयोग करने के लिए हैं। हमारा यह शिविर स्थल शुष्क मरुस्थल में है, यहां हमें लहलहाता बगीचा लगाना है और यह सब निरन्तर इस बात के चिंतन और स्मरण से होगा कि हमें हमारे जीवन का सदुपयोग करना है। शिविर के दिनों का सदुपयोग करना है और यदि हम ऐसा कर पाए तो यह दुनियां को हमारी अनुपम भेंट होगी। हमें आसपास का वातावरण जड़ दिखाई देता है लेकिन महापुरुष कहते हैं कि कुछ भी जड़ नहीं है, सर्वत्र चेतन सत्ता का प्रसार है, भगवान सर्वत्र अपनी लीला दिखा रहे हैं, झिलमिला रहे हैं, नृत्य कर रहे हैं। विज्ञान ने अणु परमाणु से आगे की खोज कर सिद्ध कर दिया कि इलेक्ट्रोन, प्रोट्रोन और न्यूट्रान निरन्तर गति कर रहे हैं और जड़ कभी गति नहीं करता, चेतन ही गतिशील है। इस प्रकार सृष्टि का मूल गतिशील है, चेतन है। हमारी जड़ता को हमने इनमें आरोपित कर लिया है। हम जितना हमारी जड़ता को छोड़ेंगे, चेतन को जागृत करेंगे उतना ही हमें सर्वत्र चेतन तत्व के दर्शन होंगे।

बाड़मेर के भारतीय ग्राम्य आलोकायन आश्रम में 11 मई को प्रातः प्रारम्भ हुए उच्च प्रशिक्षण शिविर में शिविरार्थियों का स्वागत करते हुए माननीय संघ प्रमुख श्री ने उपर्युक्त संदेश दिया। उन्होंने कहा कि हमारा मनुष्य जीवन, क्षत्रिय कुल में जन्म एवं संघ से जुड़ाव यह सब हमारा चयन नहीं है बल्कि परमेश्वर की कृपा है। इस कृपा को अनुभव करने का समय है ये 11 दिन। गीता के अनुसार सर्वत्र देवता एवं असुर नामक दो प्रवृतियां विद्यमान हैं, जड़ और चेतन विद्यमान हैं। इन दोनों का निरन्तर संघर्ष जारी है। हमारे में जितनी जड़ता है उतना ही हमारे लिए यह संसार 'दुःखालयम् अशाश्वतम्' है इसीलिए इन ग्यारह दिनों में हमारे अन्तर के चेतन के पहचानना है। जड़ और चेतन के संघर्ष की, देवता और असूरों के संघर्ष की चुनौती को हमें स्वीकारना है। चुनौती को स्वीकार करना ही क्षत्रियत्व है। चुनौती को स्वीकार कर कर्मशील होंगे तो दुःख हमारे से दूर होगा और सर्वत्र सुख का प्रसार होगा क्योंकि जहां चेतन हो वहां दुःख कैसा? शिविर में सुख और शांति की व्यवस्था है, उसे पहचानें, स्वीकार करें, सहयोग करें, किसी प्रकार का तनाव न रखें और 11 दिन में इतना संग्रहित करें कि यहां से बाहर जाने पर संसार आपको प्रभावित नहीं कर सके। हमें किसी दूसरे को बदलना नहीं है, संसार को भी नहीं बदलना है लेकिन संसार से अप्रभावित रह सकें ऐसी क्षमता अर्जित कर अपने आप को बदलना है। **(शेष पृष्ठ 7 पर)**

स्वाभिमान और स्वतंत्रता के प्रतीक की जयंती

पूरे संसार के स्वाभिमानी एवं स्वतंत्रता समर्थक लोगों के आदर्श महाराणा प्रताप की जयंती आंग्ल तिथि अनुसार 9 मई को देशभर में अनेक स्थानों पर मनाई गई। महाराणा प्रताप का जन्म संवत् 1597 के ज्येष्ठ मास के शुक्ल पक्ष की तृतीया तदनुसार 9 मई 1540 को हुआ था। अधिकांश स्थानों पर उनकी जयंती भारतीय कलैण्डर के अनुसार ज्येष्ठ शुक्ल तृतीया को मनाई जाती है, राजस्थान सरकार उस दिन अवकाश भी रखती है लेकिन देश के अन्य

कश्मीरी गेट, दिल्ली

भागों में 9 मई को भी जयंती मनाई जाती है और कई राज्यों में इस दिन अवकाश भी घोषित कर रखा है। इस वर्ष भी 9 मई को अनेक स्थानों पर जयंती मनाई गई।

देश की राजधानी दिल्ली में दिल्ली सरकार द्वारा अंतराज्यीय बस अड्डा कश्मीरी गेट पर महाराणा प्रताप की मूर्ति के अनावरण का कार्यक्रम रखा गया जिसमें मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुए उप मुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया ने कहा कि महाराणा प्रताप का मुगलों से संघर्ष स्वाभिमान का अहंकार के विरुद्ध संघर्ष था। उन्होंने कहा कि अहंकारी लोग अपनी सत्ता के विस्तार एवं स्थायित्व के लिए अन्य की स्वतंत्रता छीनते हैं तब स्वाभिमानी लोग उनसे संघर्ष करते हैं और महाराणा प्रताप इसी संघर्ष के प्रतीक हैं। उल्लेखनीय है कि दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री साहिबसिंह वर्मा की सरकार ने इस अंतर्राज्यीय बस अड्डे का नाम महाराणा प्रताप के नाम से किया था एवं उनकी मूर्ति भी लगाई थी। **(शेष पृष्ठ 3 पर)**

प्रणेता से प्रेरणा

पूज्य तनसिंह जी श्री क्षत्रिय युवक संघ के प्रणेता हैं। उनका जीवन हम सब स्वयंसेवकों एवं सहयोगियों के लिए प्रेरणा का स्रोत है। उनके जीवन की हर घटना हमारे लिए दिशा दर्शक है जो हमें उनके मार्ग पर बढ़ने की प्रेरणा देती है। ऐसी ही प्रेरणादायी घटनाओं का संकलन पथप्रेरक के इस कॉलम में धारावाहिक रूप से प्रकाशित किया जा रहा है।

विगत अंक में हमने पढ़ा कि पूज्य तनसिंह जी ने किस प्रकार अपनी राजनीतिक हैसियत को अपने परिवार की संपत्ति नहीं बनने दिया। उन्होंने निर्ममता पूर्वक इस बात का पालन किया कि व्यक्ति की सामाजिक स्थिति उसके परिवार की निजी संपदा नहीं होती है बल्कि उसका हिताधिकारी सम्पूर्ण समाज होता है और उसका श्रेष्ठतम उपयोग समाज के लिए काम आना ही है। उन्होंने परिवारजनों के व्यक्तिगत कार्यों के लिए जहां सदैव उपेक्षा पूर्ण व्यवहार करते हुए कभी अपनी राजनीतिक हैसियत को उनकी महत्वाकांक्षा एवं सुविधा भोग का साधन नहीं बनने दिया वहीं समाज के लिए आवश्यक होने पर सदैव उसका मुक्त हस्त उपयोग किया। उनकी इसी प्रवृत्ति को पुष्ट करने वाली एक घटना सन् 1974 में चौपासनी विद्यालय में घटी। जोधपुर के राजपूत छात्रावास एवं जाट छात्रावास के विद्यार्थियों के बीच किसी बात को लेकर झगड़ा हो गया और मारपीट भी हुई। उस झगड़े की प्रतिक्रिया स्वरूप जाट छात्रावास के कुछ विद्यार्थी अन्यों के सहयोग से एक ट्रक में सवार होकर रात को चौपासनी विद्यालय पहुंच गए एवं उन्होंने एक छात्रावास के बाहर सो रहे विद्यार्थियों पर हमला कर मारपीट की और भाग गए। इस हमले की प्रतिक्रिया स्वाभाविक थी और उसी प्रतिक्रिया में चौपासनी विद्यालय के कुछ विद्यार्थियों ने विद्यालय के निकट ही स्थित स्व. नाथूरामजी मिर्धा के फार्म हाउस पर तोड़फोड़ की। नाथूरामजी उस समय के शीर्ष नेताओं में गिने जाते थे इसलिए पुलिस कार्रवाई हुई और चौपासनी विद्यालय के विद्यार्थियों को गिरफ्तार कर लिया गया। मार्च-अप्रेल का समय था और विद्यार्थियों की परीक्षाएं शुरू हो गई थीं। जमानत नहीं मिलने के कारण परीक्षा से वंचित होने की पूरी संभावना थी पूज्य तनसिंह जी ने कोर्ट के माध्यम से उन विद्यार्थियों की परीक्षा की अनुमति ली लेकिन प्रशासन की बदमाशी के कारण तीन परीक्षाएं फिर भी चूक गए। जैसा कि हमेशा होता आया है समाज के अनेक लोग नाथूरामजी के पक्ष में हमारे ही लोगों का विरोध करने लगे। उस समय चौपासनी का प्रबंधन क्योंकि तनसिंह जी से संबद्ध लोगों के पास था इसलिए तनसिंह जी को लक्ष्य बनाकर भी विरोध किया गया। समाज के अनेक लोगों ने भी सक्रिय विरोधी की भूमिका निभाई। लेकिन पूज्य तनसिंह जी उन सब से अप्रभावित रहते हुए घटना में फंसे लोगों को बचाने हेतु प्रयासरत रहे। चौपासनी शिक्षा समिति के तत्कालीन अध्यक्ष सज्जनसिंह जी के आग्रह पर नाथूरामजी से मिलकर पूरी बात समझाई। अंत में समझौता हुआ और उन विद्यार्थियों को जमानत मिली। उनकी शेष रही तीन परीक्षाओं के लिए पूज्य तनसिंह जी ने तत्कालीन मुख्यमंत्री हरिदेव जोशी से व्यक्तिगत बात की एवं उन सभी के लिए पूरक परीक्षा के साथ परीक्षा आयोजित करवाई जिससे उनका पूरा वर्ष खराब होने से बच सका व वे अपनी पढ़ाई अबाधित रख सके। समाज की आवश्यकता को समझकर समाज के ही लोगों के विरोध को दरकिनार करते हुए अपना स्वतः ओढा हुआ दायित्व निभाया।

जीवनोपयोगी जानकारी-5

– अभयसिंह रोडला

विगत अंक में हमने गणित विषय-वर्ग के विद्यार्थियों के लिए 12वीं कक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् उपलब्ध विकल्पों पर चर्चा की, जिसमें इंजीनियरिंग सर्वाधिक लोकप्रिय तथा महत्त्वपूर्ण है। इंजीनियरिंग संस्थानों में प्रवेश की प्रक्रिया जानने के पश्चात् यह जानना भी आवश्यक है कि कौनसी शाखा चुनने पर हमारे लिए कॅरियर का कौनसा दरवाजा खुलेगा। अतः अब हम इंजीनियरिंग कोर्स में उपलब्ध शाखाओं की जानकारी प्राप्त करेंगे :

1. एयरोनॉटिकल : एयरोनॉटिकल अथवा वैमानिकी विमानों के निर्माण एवं डिजाइन से संबंधित शाखा है। इसके अन्तर्गत पृथ्वी के वातावरण के भीतर उड़ने वाले विमान जैसे एयरोप्लेन, हैलिकॉप्टर आदि के निर्माण व डिजाइन का ज्ञान प्राप्त किया जाता है।

2. एयरोस्पेस : यह शाखा भी विमानों के निर्माण, डिजाइन एवं संचालन से संबंधित है तथा इसमें पृथ्वी के वातावरण से बाहर यात्रा करने वाले अंतरिक्ष-यान भी सम्मिलित हैं। बढ़ते हुए अन्तरिक्ष उद्योग की दृष्टि से उपरोक्त दोनों शाखाएं अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं।

3. एग्रीकल्चरल इंजीनियरिंग (कृषि अभियांत्रिकी) : भारत जैसे कृषि प्रधान देश में अभियांत्रिकी की यह शाखा महत्त्वपूर्ण है, जिसमें कृषि उत्पाद, कृषि उपकरण तथा कृषि प्रसंस्करण के क्षेत्र में विशेषज्ञता प्राप्त की जाती है।

4. आर्किटेक्चर इंजीनियरिंग : अभियांत्रिकी की इस शाखा में भवन (बिल्डिंग) निर्माण तथा डिजाइन के क्षेत्र में विशेषज्ञता प्राप्त की जाती है।

5. ऑटोमोबाईल इंजीनियरिंग : सड़क पर चलने वाले सभी प्रकार के वाहन जैसे : स्कूटर, कार, बस, ट्रक आदि के निर्माण, संचालन एवं डिजाइन से संबंधित शाखा।

6. ऑटोमेशन एण्ड रोबोटिक्स : स्वचालित यंत्रों तथा रोबोट्स के संचालन निर्माण तथा डिजाइन का अध्ययन अभियांत्रिकी की इस शाखा के अन्तर्गत किया जाता है।

7. एवियोनिक्स : इसके अन्तर्गत विमान, रॉकेट, उपग्रह आदि के संचार, नेविगेशन, विद्युत-व्यवस्था का अध्ययन किया जाता है। ध्यातव्य है कि एयरोनॉटिकल एवं एयरोस्पेस शाखाएं विमानों के यांत्रिक पक्ष से संबंध रखती हैं जबकि एवियोनिक्स विमानों के इलेक्ट्रोनिक्स से संबंधित है।

8. बायो-मेडिकल इंजीनियरिंग : यह जीव-विज्ञान तथा स्वास्थ्य विज्ञान के क्षेत्र में प्रयुक्त होने वाले अभियांत्रिकी सिद्धान्तों के अध्ययन से संबंधित शाखा है। यह चिकित्सकीय क्षेत्र में प्रयुक्त होने वाले उपकरणों, यंत्रों आदि के निर्माण व संचालन से संबंधित है।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

'गुरु शिखर से' (विविध विषयों का कॉलम)

कन्या कुमारी

स्वरूपसिंह जिंझनियाली

एक कथा प्रचलित है कि कश्यप प्रजापति के चार पुत्रों में से बड़े बाणासुर नामक पुत्र ने कठिन तपस्या कर परमेश्वर से अमरत्व का वरदान प्राप्त कर लिया था। परमात्मा ने उसे वर दिया कि उस का अन्त केवल कन्या के हाथ से ही हो सकता है। वर से मदचूर बाणासुर ने प्रजा पर अत्याचार करने प्रारम्भ कर दिए। इस विकट समस्या से निपटने के लिए सुर मुनि भगवान विष्णु के पास गए। विष्णु के कहे अनुसार देवताओं एवं ऋषियों ने महायज्ञ किया जिससे हवन कुण्ड से पराशक्ति रूपी कन्या उत्पन्न हुई। वह तपस्या में तल्लीन रहती हुई जब विवाह योग्य हो गई तो नारद जी ने कन्या को विवाह नहीं करने की सलाह दी ताकि वह बाणासूर का वध कर सके। नारदजी ने कन्या को कहा कि आपसे वरने आ रहे परमात्मा पुरुष को यह आज्ञा दीजिए कि बिना आंख वाला नारियल, बिना गांठवाला गन्ना तथा बिना नस वाला ताम्बूल पान तीनों सूर्योदय से पहले लाकर देवें तो ही वह उनसे विवाह करेगी। शक्ति की आज्ञानुसार जब परमेश्वर तीनों वस्तुएं लेकर देवी के पास पहुंचने वाले थे तभी नारदजी ने चतुराई से मुर्गे की बांग की तरह आवाज निकाली। परमेश्वर आवाज सुन कर स्तब्ध रह गए कि सवेरा हो गया है। अब विवाह नहीं हो सकता, वे उसी जगह प्रस्तर मूर्ति बन गए। उधर कन्या रूपी देवी का विवाह रुक गया और उसने व्याकुल मन से कन्या रहने का निश्चय किया। अब एक दिन राक्षस बाणासूर उस कन्या के सौन्दर्य की प्रशंसा सुनकर उसके सामने विवाह का प्रस्ताव लेकर उपस्थित हुआ। कन्या ने उसका वध कर सबको उसके अत्याचारों से निजात दिलाई। इसी कन्या के नाम से यह स्थान कन्या कुमारी कहलाने लगा।

हिमालय से लेकर सुदुर दक्षिण में कन्याकुमारी तक के विशाल भू-भाग पर राजा भरत का साम्राज्य रहा है। उसकी एक पुत्री के अधीन दक्षिण भारत का आधिपत्य था। वह यहां राज करण के साथ-साथ तपस्या रत रही थी। उसकी प्रसिद्धि से भी यह स्थान कन्याकुमारी कहलाता है। कन्याकुमारी स्थान की महिमा यजुर्वेद एवं पुराणों में भी आती है। कन्याकुमारी वर्तमान में तामिलनाडु राज्य के अन्तर्गत आता है जहां केरल की सीमा भी आकर मिलती है। इसे भारत का 'लैण्ड ऑफ एण्ड' कहते हैं। यहां धरती की सीमा समाप्त हो जाती है तथा तीन सागरों का त्रिवेणी संगम यहां बनता है। पूरब में बंगाल की खाड़ी पश्चिम में अरब सागर तथा दक्षिण में हिन्द महासागर मिलकर उत्तर में स्थित भारत माता देवी के चरणों में रोज अपनी लहरों से अंजली देते हैं। यहां पूर्व में बंगाल की खाड़ी में उगता सूर्य तथा शाम को पश्चिम में अरब सागर में होता सूर्यास्त तथा पूर्णिमा के दिन सूर्यास्त के समय चन्द्रोदय की छवि बड़ा ही मनोहारी दृश्य उत्पन्न करती है। त्रिसमुद्री संगम पर देवी कन्या कुमारी का मंदिर बना है। जहां वह कन्या के रूप की मूर्ति में तपस्या में लीन है। यहां भादवा, वैशाख व नवरात्रि में मेला भरता है। मंदिर के चारों तरफ पवित्र घाट स्नान के लिए बने हुए हैं। तीनों सागरों के संगम स्थल पर धरती से कुछ अन्दर पानी के मध्य एक विशाल चट्टान स्थित है। जहां स्वामी विवेकानंद ने तपस्या कर आत्म ज्ञान प्राप्त किया था। यहां पर उनकी याद में विशाल मंडप एवं स्मारक बनाया गया है। साठ फीट ऊंचे मुख्य गुबन्ज के नीचे स्वामी विवेकानन्द की साढ़े आठ फीट ऊंची कास्य प्रतिमा अवस्थित है। कन्याकुमारी में विशाल भूभाग पर विवेकानंद केन्द्र बनाया गया है। यहां पर श्री क्षत्रिय युवक संघ के चार-चार दिन के दो दम्पति शिविर लग चुके हैं।

स्वाभिमान और स्वतंत्रता के प्रतीक की जयंती

बापिणी

बाड़मेर

(पृष्ठ एक का शेष) कालांतर में मेट्रो स्टेशन के निर्माण के चलते उसे वहां से विस्थापित कर निकट कुदसिया पार्क में रखा था। अब मेट्रो स्टेशन बनकर तैयार हो गया है। स्थानीय राजपूतों ने वर्तमान उप मुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया से सम्पर्क किया तो उन्होंने नई मूर्ति लगवाने का आश्वासन दिया। उसी मूर्ति का प्रताप जयंती के अवसर पर उप मुख्यमंत्री द्वारा अनावरण किया गया। इसके अलावा भी देश भर में अनेक स्थानों पर जयंती मनाने के समाचार है। जैसलमेर में संघ कार्यालय 'तनाश्रम' में स्थानीय स्वयंसेवकों ने जयंती मनाई। वरिष्ठ स्वयंसेवक हरिसिंह बैरसियाला ने महाराणा प्रताप के जीवन को त्याग, बलिदान और स्वाभिमान का प्रतीक बताया। गिरवरसिंह जोगीदास का गांव में पूज्य तनसिंह जी रचित निबंध 'चेतक की समाधि से' का पठन किया। मुंबई की ऐरोली शाखा में शाखा के स्वयंसेवकों ने जयंती मनाई। जोधपुर की शेरगढ़ तहसील के डेरिया गांव में सामाजिक समरसता एवं भाईचारे के संदेश के साथ जयन्ती मनाई। नागौर की छापड़ा शाखा में वरिष्ठ स्वयंसेवक मदनसिंह छापड़ा के सानिध्य में जयंती मनाई गई। नोखा में स्थानीय समाज बंधुओं द्वारा जयंती मनाई गई जिसे अर्जुनसिंह डेह, सवाईसिंह चरकड़ा, आवड़दान, अमरसिंह आदि ने संबोधित किया। वक्ताओं ने इतिहास को सही रूप में प्रकट करने की आवश्यकता बताई। बाड़मेर के मल्लीनाथ छात्रावास में प्रताप युवा शक्ति द्वारा जयंती मनाई गई। गोपालसिंह सुवाला ने कहा कि आज हमार क्षत्रियत्व केवल सोशल साईट्स पर सिमट कर रह गया है उसे आचरण में उतारने की आवश्यकता है। मुख्य वक्ता कमलसिंह चूली ने कहा कि महाराणा प्रताप का अकबर से युद्ध किसी भूमि के टुकड़े के लिए नहीं बल्कि सिद्धान्तों के लिए युद्ध था। विश्व में जब भी स्वाभिमान शब्द का उच्चारण किया जाएगा तब-तब प्रताप को अवश्य याद किया जाएगा। हमें प्रताप से यही सीख मिलती है कि स्वाभिमान की रक्षा के लिए अन्त तक संघर्ष किया जाना चाहिए। रानीवाड़ा (जालोर) के प्रताप चौक पर जयंती मनाई गई। जोधपुर जिले के बापिणी कस्बे में आसपास के ग्रामीणों की उपस्थिति में जयंती मनाई गई जिसमें बृजराज सिंह मांगलिया, गिर्राजसिंह लोटवाड़ा, दुर्गसिंह, भंवरसिंह जाखण, वीरेन्द्र प्रताप सिंह, हनुमानसिंह आदि ने महाराणा प्रताप के मार्ग पर चलने का आह्वान किया। बाप कस्बे के जसोणियों का बास में जयंती मनाई गई। तापू के भादरिया राम वाटिका में जयंती मनाई गई। बालेसर बस स्टैण्ड पर 9 मई की शाम को भव्य भजन संध्या का आयोजन किया गया। यहां कार्यक्रम में कर्नल नारायणसिंह बेलवा, चक्रवर्तीसिंह जोजावर आदि ने अपने विचार रखे। सामाजिक समरसता इस कार्यक्रम का मुख्य विषय रहा। जैसलमेर के जवाहिर राजपूत छात्रावास में राजपूत सेवा समिति द्वारा जयंती मनाई गई। सिरोही जिले के मांडाणी गांव में भी जयंती मनाई गई। गुजरात के विभिन्न शहरों में भी प्रताप जयंती 9 मई को मनाई गई। साणंद, मेघाणीनगर, वस्ताल, ऊंझा, पालनपुर, सुईगाम, बडोदरा, आनंद, सूरत, लूणावाड़ा आदि स्थानों पर समारोह पूर्वक जयंती मनाने के समाचार हैं। इसके अलावा उत्तरप्रदेश, हरियाणा, पंजाब, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ सहित सम्पूर्ण राष्ट्र में राष्ट्र पुरुष की जयंती मनाने के समाचार विभिन्न समाचार माध्यमों में प्रसारित हुए हैं।

जैसलमेर

डेरिया (जोधपुर)

मुम्बई

नारी गांव में बाल शिविर

गुजरात के खोडियार प्रांत के नारी गांव में 28 व 29 अप्रेल को बाल शिविर संपन्न हुआ जिसमें नारी, मोरचंद, शिव शक्ति, भक्ति नगर, पनियारी आदि शाखाओं के बाल स्वयंसेवकों ने प्रशिक्षण लिया। शिविर का संचालन विश्वदीपसिंह अवाणिया ने किया एवं वरिष्ठ स्वयंसेवक सहयोगी के रूप में उपस्थित रहे।

खोडियार प्रांत का प्रांत मिलन : बाल शिविर के समापन के बाद 29 अप्रेल को नारी गांव के समाज भवन में गोहिलवाड़ संभाग के खोडियार प्रांत के स्वयंसेवकों का प्रांत मिलन रखा गया जिसमें उ.प्र.शि. की तैयारियों को लेकर चर्चा की गई।

यथार्थ गीता का अखंड पाठ

स्वामी अड़गड़ानंद जी द्वारा लिखित गीता की यथार्थ टीका 'यथार्थ गीता' का उनके भक्तजन एवं धर्म के मर्म को समझने की चाह रखने वाले अखंड पाठ करवाते हैं। स्वामी जी कहते हैं कि चार-पांच बार इसे गंभीरता से पढ़ने से ईश्वर की ओर बढ़ने का मार्ग स्पष्ट होने लगता है। उसी कड़ी में ऐसा अखंड पाठ करने की परम्परा प्रारम्भ हुई है। संघ के अनेक स्वयंसेवक भी ऐसा करवा रहे हैं। ऐसा ही अखंड पाठ पाबुदानसिंह दौलतपुरा के आवास पर 27 अप्रेल को प्रातः 5 बजे से सायं 8 बजे तक किया गया। 28 अप्रेल को प्रातः यज्ञ का आयोजन हुआ जिसमें परिवार जनों के साथ-साथ ग्रामवासी भी शामिल हुए।

संपादकीय

राष्ट्रीय बहस के अल्पजीवी मुद्दे

सोशल मीडिया के जमाने में राष्ट्रीय बहस का दायरा बढ़ गया है। पुराने समय में कुछ चुनींदा समाचार पत्रों एवं टेलीविजन चैनल पर चलने वाली बहस अब हर सामान्य नागरिक तक पहुंच गई है। अब पहले कि तरह रेडियो में रात 8.45 के समाचार सुनने का इंतजार नहीं करना पड़ता और ना ही सुबह अखबार का इंतजार करना पड़ता। अब प्राईम टाईम समाचार देखने की भी इतनी उत्कंठा नहीं रह गई क्योंकि सब कुछ त्वरित गति से तुरन्त सोशल मीडिया तक प्रसारित हो जाता है और हर व्यक्ति उन सभी बहसों में शामिल हो जाता है जिनको राष्ट्रीय बहस का नाम दिया जाता रहा है। इस प्रकार आज राष्ट्रीय बहस का दायरा बढ़ गया है। लेकिन जितना इसका दायरा बढ़ा है उतनी ही यह अल्पजीवी भी हो गई है। एक मुद्दे पर बात प्रारम्भ होती है तब तक देश के किसी कोने में कोई दूसरी घटना हो जाती है और उसकी जानकारी लोगों तक प्रसारित होते ही बहस का मुद्दा बदल जाता है। इस प्रकार एक बहस किसी मुकाम तक पहुंचे उससे पहले ही पीछे छूट जाती है और नई बहस प्रारम्भ हो जाती है। इस प्रकार कोई भी मुद्दा दीर्घजीवी बनकर राष्ट्र के नीति निर्माताओं को प्रभावित करे उससे पहले ही समाप्त हो जाता है। देश के राजनीतिज्ञों ने इस नब्ज को बड़ी ही कुशलता पूर्वक पकड़ लिया है इसलिए वे हर मुद्दे को नेपथ्य में धकेलने में अपनी कुशलता का भरपूर उपयोग करते हैं और राष्ट्र की मेधाशक्ति अपने आपको ठगा महसूस करती है क्योंकि लोकतंत्र में सही गलत सब बहुमत से निर्धारित होता है इसलिए देश की मेधाशक्ति भी बहुमत से प्रभावित होती है। राजनेता जन सामान्य को अपनी इच्छानुसार मुद्दे उपलब्ध करवा कर उपयोगी एवं सार्थक विषयों से ध्यान भटकाते हैं और देश की मेधा शक्ति जनता के रूख के अनुसार स्वयं को ढालने को मजबूर है क्यों कि उन्हें जिन माध्यमों से अपनी बात करनी होती है उनको भी तो अपनी टी.आर.पी. बढ़ानी होती है और वे भी उन्हीं बहसों में रुचि लेते हैं जिनमें जनता की रुचि होती है। इस प्रकार रुचि का परिष्कार करने का तंत्र असाधारण रूप से विफल हो गया है। सबसे बड़ी बात तो यह है कि विभिन्न राजनीतिक दल संगठित रूप से इस प्रकार मुद्दों को भटकाने के लिए प्रयासरत हैं और इसके लिए उन्होंने सूचना तकनीक (आईटी) सेल बना रखी हैं। इन आईटी सेल में बैठे पेशेवर लोगों का काम ही यह होता है कि किस प्रकार बातों को तोड़ मरोड़ कर सोशल मीडिया के माध्यम से जनता से समक्ष पेश किया जाए ताकि जनता अपने जीवन से संबंधित महत्त्वपूर्ण मुद्दों की ओर आकृष्ट ही न हो और निरर्थक मुद्दों पर बहस करती रहे। इसीलिए आज जनता सोशल मीडिया पर इस बात पर बहस करती है कि राहुल गांधी को कौन से शब्द के उच्चारण में दिक्कत होती है? सोनिया गांधी का विवाह से पहले का जीवन कैसा था? नेहरू जी के परिवार की उत्पति कहां से हुई? प्रधानमंत्री जी का वैवाहिक जीवन सफल क्यों नहीं हुआ? उनको पहनने के लिए कपड़े कहां से आते है? राहुल गांधी ने मंदिर में थाली में पैसे किस प्रकार रखे आदि-आदि। इस प्रकार आज राष्ट्रीय बहस का मुद्दा यह नहीं है कि राष्ट्र में छोटे-छोटे बालकों के साथ हो रहे अनाचार की जड़ क्या है? यदि कोई घटना घटती है तो एक डेढ़ दिन हो हल्ला होता है इसी बीच कोई नई मशालेदार बात बीच में आती है और बहस का प्रवाह उधर मुड़ जाता है या फिर उस बहस को इस ओर मोड़ दिया जाता है कि आरोपित एवं पीड़ित का जाति संप्रदाय क्या है? आज राष्ट्र की मेधा शक्ति इस बात को लेकर चर्चा नहीं कर रही कि देश की अर्थव्यवस्था किस ओर जा रही है, लोगों का जीवन स्तर किस ओर जा रहा है, लोगों के जीवन से भारतीयता समाप्त होती जा रही है, स्वतंत्रता के नाम पर स्वछंदता पनपती जा रही है क्योंकि उन्हें इस बात से ही फुर्सत नहीं है कि गाय, मंदिर और मस्जिद के बारे में किसने क्या कहा? उन्हें इस बात से फुर्सुत नहीं कि किसी कथावाचक ने बाबा बनकर क्या-क्या दुष्कर्म किए और उससे देश के संत-महात्माओं की छवि को नकारात्मक कैसे बनया जाए? कुल मिलाकर देश एक भयंकर संक्रमण से गुजर रहा है जहां हर महत्त्वपूर्ण मुद्दे को राजनीतिक लोगों के लाभ और हानि से तोला जा रहा है। समाज के पूजनीय मापदंडो को सत्ता के लिए बाजारु बना दिया गया है। देश के प्रधानमंत्री तक कई बार बिना सिर पैर की बातें कर देश को गुमराह करने की कोशिश करें तो फिर किसको दोष दिया जाए? दोष देने लायक या सत्ता के शीर्ष पर बैठे लोगों को नियंत्रित करने के लिए लोकतंत्र में जिस विपक्ष की अवधारणा की कल्पना की गई थी वह तो आज पंगु होकर अयोग्य लोगों की चाटुकारिता में संलग्न है। प्रायः यह तर्क दिया जाता है कि देश में प्रचंड बहुमत की सत्ता है इसलिए विपक्ष कमजोर है तो स्मरण रहे कि इससे भी प्रचंड बहुमत की सत्ता इस देश में पहले भी रही है लेकिन ऐसी स्वैच्छाचारिता नहीं पनप पाई क्योंकि उस समय विपक्ष के पास जनता का समर्थन था और वे भी समर्थन हासिल करने की क्षमता रखते थे। कुल मिलाकर आज देश लोकतंत्र की इस सबसे बड़ी कमजोरी से ग्रसित है कि यदि मतदाता जागरुक न हो तो राजनेता कैसे उसे मूर्ख बनाकर सत्ता के शीर्ष पर बने रह सकते हैं और जिन पर इस प्रवृति को रोकने का दायित्व है, जनता को जागरुक करने का दायित्व है वे अपनी रेवेन्यु या टी.आर.पी. के चक्कर में चाटुकारिता कर रहे हैं और जो लोग थोड़ा बहुत विरोध कर रहे हैं वे अपनी विश्वसनीयता पूर्व में ही इतनी खो चुके हैं कि जनता उनकी बात ही नहीं सुनती और ऐसे में राष्ट्रीय परिदृश्य से राष्ट्रीय बहस के मुद्दे नदारद हैं और नितांत व्यक्तिगत मुद्दों पर जनता एवं जनता को प्रभावित करने वाली मेघा शक्ति व्यस्त है। विडंबना का विषय तो यह है कि जिनको जनता को प्रभावित करना चाहिए वे अपने निहित स्वार्थों के वशीभूत हो जनता से प्रभावित हो रहे हैं। ऐसे ही संक्रमण काल में हमारे पूर्वजों ने इस देश को दिशा दी है लेकिन क्या हम आज तैयार हैं?

खरी-खरी

जीवन बनाए, बिगाड़े नहीं

सनातन संस्कृति में जीवन काल को चार कालखंडों में विभक्त कर तदनुसार चार आश्रमों की अवधारणा विकसित हुई। जीवन के प्रथम 25 वर्ष के कालखण्ड को ब्रह्मचर्य आश्रम का नाम दिया गया। ब्रह्मचर्य का शाब्दिक अर्थ तो ब्रह्म में आचरण होता है जो एक आध्यात्मिक अवधारणा है लेकिन प्रचलित अवधारणा को सरलता से समझा जाए तो यह कालखण्ड आगामी जीवन की तैयारी का समय होता है। जीवन को बनाने का समय होता है। इसीलिए इसे जीवन की आधारशिला भी कहा जाता है। यही वह समय होता है जब व्यक्ति आगामी कालखण्ड के लिए स्वयं को तैयार करता है। वस्तुतः चारों आश्रमों में पहला अगले की तैयारी है और इस कड़ी में एक का भी ढंग से निर्वाह नहीं होने पर क्रम बिगड़ता है। प्राचीन काल में ब्रह्मचर्य आश्रम का अधिकांश समय घर से बाहर ऋषियों के आश्रम में व्यतीत होता था लेकिन वर्तमान में ऐसी कोई समीचीन व्यवस्था के अभाव में व्यक्ति समाज के बीच ही रहता है और ऐसे में निश्चित रूप से समाज के क्रियाकलापों से प्रभावित होता है। ऐसे क्रियाकलापों से भी प्रभावित होता है जो उसके इस कालखण्ड के जीवन को नकारात्मक रूप से प्रभावित करते हैं। यह समय जैसा ऊपर बताया गया कि जीवन को बनाने का समय होता है। शरीर को बनाने का समय होता है, बुद्धि को तराशने का समय होता है, भावी जीवन को प्रभावी बनाने वाली क्षमताएं अर्जित करने का समय होता है, एक तरह से सम्पूर्ण व्यक्तित्व को गढ़ने का समय होता है। दुर्भाग्य से उपभोक्तावादी संस्कृति के प्रभाव में हम सम्पूर्ण व्यक्तित्व वाली अवधारणा को तो पीछे छोड़ आए हैं लेकिन फिर भी भावी भौतिक जीवन की सफलता के लिए आवश्यक अध्ययन पर आज भी इस कालखण्ड में विशेष जोर दिया जाता है, हालांकि यह नितांत एकपक्षीय अवधारणा है लेकिन फिर भी आज के जमाने की यह वास्तविकता है। लेकिन इससे भी बड़ी विडंबना यह है कि आजकल यह कालखण्ड उग्र प्रतिक्रिया वादी विचारों की भेंट चढ़ रहा है। अपरिपक्व हृदय के कारण इस वय का व्यक्ति भावनात्मक मुद्दों की तरफ आसानी से आकर्षित होता है और लोगों के निहित स्वार्थों का साधन बनता जाता है। हमारे समाज के हर समझदार व्यक्ति ने विगत दिनों इस प्रकार की स्थिति को महसूस किया है और वो इससे हो रहे नुकसान पर चर्चा करते सुने जा सकते हैं। यह केवल हमारे समाज में ही हो रहा है ऐसा नहीं है बल्कि हर समाज एवं संप्रदाय की उग्र प्रतिक्रियावादी ताकतों का निशाना युवा ही बनता जा रहा है। लेकिन हमारे समाज में विगत दिनों में यह भावनात्मक ज्वार त्वरित वेग से उठा है और समाज की महत्त्वपूर्ण संपदा को स्वयं में लीलता जा रहा है। इसका अर्थ यह कदापि नहीं है कि हम भावनाशुन्य बन जाएं लेकिन भावनाओं को सही दिशा देने की आवश्यकता है। उन भावनात्मक तरंगों को इस वास्तविकता की ओर मोड़ने की आवश्यकता है कि तरुणाई का यह समय ऊर्जा के संग्रह का समय है। यदि इस समय का सदुपयोग ऊर्जा के संग्रह में नहीं किया तो खाली रह जाएंगे और यह रिक्तता जीवन के अगले पड़ाव में गंभीर समस्या धारण कर लेगी। इसलिए इस कालखण्ड की तो सबसे बड़ी समाज सेवा यही है कि तरुणाई अपने आपको अपनी ऊर्जा के संग्रहण द्वारा इतना मजबूत बनाए कि भावी जीवन में गृहस्थ के रूप वह समाज को श्रेष्ठ संतान दे सके, उसका श्रेष्ठ रूप में पालन पोषण कर सके, साथ ही अपने परिवार के अलावा शेष समाज की आवश्यकता की पूर्ति में सहयोग दे सके। यदि वह ब्रह्मचर्य और गृहस्थ आश्रम को भली प्रकार जी लेगा तो वानप्रस्थी के रूप में समाज का उत्कृष्ट सेवक बन पाएगा। लेकिन अभी तो उलटा हो रहा है, तरुणाई के समक्ष सीधा ही समाज सेवा का छद्म व उग्र प्रतिक्रियावादी मॉडल प्रस्तुत किया जा रहा है जो उनके जीवन को मिटाने के साथ-साथ समाज के जीवन को भी कुंद कर रहा है। उसके भविष्य पर गंभीर प्रश्न चिह्न लगा रहा है। इसलिए युवाओं को चाहिए कि अपना पूरा ध्यान अपने निर्माण पर देवें, कथित भौतिक सुविधाओं से युक्त जीवन जीने की क्षमताएं अर्जित करने के साथ-साथ अपने मन, बुद्धि एवं शरीर को तराशने के लिए मार्ग ढूंढें और उसके अनुगामी बनें। सदैव इस बात का स्मरण रखें कि शक्ति के निर्माण के बिना उपयोग और प्रदर्शन खोखला ढकोसला मात्र होता है। इसलिए समाज की ताकत दिखाने के लुभावने भावनात्मक नारों से बचकर समाज की ताकत बनने का प्रयास करें। **(शेष पृष्ठ 7 पर)**

शिविर सूचना

क्र.सं.	शिविर	समय	स्थान मार्ग आदि
1.	विशेष शिविर	22.05.2018 से 25.05.2018 तक	भारतीय ग्राम्य आलोकायन आश्रम, गेहूं रोड, **बाड़मेर**।
2.	प्रा.प्र.शि.	26.05.2018 से 29.05.2018 तक	श्री लक्ष्मण राजपूत छात्रावास **डूंगरपुर**। सम्पर्क सूत्र : 9602554818
3.	मा.प्र.शि. (बालिका)	28.05.2018 से 03.06.2018 तक	दादावाड़ी धाम, **बरमसर** जिला- जैससमेर। जैसलमेर से बीकानेर वाया देवा, मोहनगढ़ वाली बसें बरमसर होकर जाती है।
4.	प्रा.प्र.शि.	28.05.2018 से 31.05.2018 तक	**गेलाना,** तहसील सुवासरा, जिला-मंदसौर (मध्यप्रदेश)। सुवासरा उतर कर 12 किमी दूर कालेश्वर मंदिर परिसर गेलाना पहुंचे। **सम्पर्क सूत्र :** 9425978051, 9977800497, 9413641017
5.	प्रा.प्र.शि.	30.05.2018 से 02.06.2018 तक	**लांबापारडा** (बांसवाड़ा)। सम्पर्क सूत्र : 9983565520, 9587968610
6.	प्रा.प्र.शि.	03.06.2018 से 06.06.2018 तक	**कुणी** (प्रतापगढ़), सम्पर्क सूत्र : 9928051478
7.	प्रा.प्र.शि.	07.06.2018 से 10.06.2018 तक	आंतरी माताजी, **आंतरी** जिला नीमच (म.प्र.)। सम्पर्क सूत्र : 7357179555
8.	प्रा.प्र.शि. (बालिका)	07.06.2018 से 10.06.2018 तक	महाराणा प्रताप हॉस्टल, **गढी परतापुर,** बांसवाड़ा। बांसवाड़ा से डूंगरपुर जाने वाली बसें गढी परतापुर होकर जाती हैं। **सम्पर्क सूत्र :** 9783624223, 9983565520, 9587968610
9.	प्रा.प्र.शि.	11.06.2018 से 14.06.2018 तक	**बस्सी** (चित्तौड़गढ़), सम्पर्क सूत्र : 7357179555
10.	प्रा.प्र.शि.	15.06.2018 से 18.06.2018 तक	**हल्दीघाटी** (राजसमंद)। सम्पर्क सूत्र : 9829081971

शिविर में आने वाले युवक काला नीकर, सफेद कमीज या टीशर्ट, काली जूती या जूता व युवतियां केसरिया सलवार कमीज, कपड़े के काले जूते, मौसम के अनुसार बिस्तर (एक परिवार से दो जने हों तो अलग-अलग), पेन, डायरी, टॉर्च, रस्सी, चाकू, सूई-डोरा, कंघा, लोटा, थाली, कटोरी, चम्मच, गिलास साथ लेकर आवें। संघ साहित्य के अलावा कोई पत्र-पत्रिका, पुस्तकें एवं बहुमूल्य वस्तुएं साथ ना लावें। उच्च प्रशिक्षण शिविर में आने वाले मेरी साधना पुस्तक साथ लेकर आवे।

राजेन्द्रसिंह बोबासर, शिविर कार्यालय प्रमुख

आवेश और रणनीति आमने-सामने

विगत कुछ समय से समाज के लोगों में आवेश और रणनीति के सामंजस्य का स्पष्ट अभाव दृष्टिगोचर हो रहा है। जब व्यवस्था को चलाने वाले लोग रणनीतिक रूप से आपके खिलाफ हों तो उनसे संघर्ष के लिए उसी प्रकार की रणनीति की आवश्यकता होती है लेकिन विडम्बना यह है कि हमारे विरोधी ठण्डे दिमाग से सोच विचार कर हमारे अस्तित्व पर चोट करते हैं और हम स्वाभाविक आवेश में आकर उनकी रणनीति के शिकार हो अलग-थलग हो जाते हैं। ऐसा लगता है रणनीतिक हमलों का जवाब रणनीतिक सोच से ही दिया जा सकता है लेकिन हमारे तथाकथित समाजसेवियों ने तो जैसे तय कर रखा है कि हमारे आवेश और रणनीति में तो हम छत्तीस का आंकड़ा ही रखेंगे। कभी भी हमारे आवेश से उपजी ऊर्जा का रणनीति के तहत सदुपयोग नहीं करेंगे बल्कि उसे विरोधियों की रणनीति का साधन बनाकर हार में ही जीत की कल्पना को बनाए रखेंगे और उसी का परिणाम है कि कहीं किसी जयंती के नाम पर, कहीं किसी मूर्ति के नाम पर, कहीं किसी बारात के नाम पर तो कहीं किसी दुल्हे को घोड़ी से उतारने के नाम पर हम हमारे नासमझ आवेश के शिकार हो विरोधियों की रणनीति को सफल बना देते हैं। सोशल मीडिया जैसे सार्वजनिक मंच पर अनर्गल टिप्पणियां कर हम हमारी इस नासमझी का विस्तार करते हैं और परिणाम स्वरूप प्रसाद पाने को मंदिर तोड़ने की कार्रवाई करते हैं। यह नहीं सोचते कि मंदिर रहेगा तो प्रसाद तो फिर मिल जाएगा लेकिन ऐसी सोच से तो हमारे तथाकथित जोशीले समाजसेवियों ने किनारा कर लिया है इसीलिए तो हम अपनों का ही शिकार कर शिकारी होने का दावा करते हैं जबकि वस्तुस्थिति यह है कि शिकारी कोई और होता है और वह नेपथ्य में रहकर हम शिकारी बनने का दावा करने वालों का ही शिकार करता है। इसलिए आवेश आना, जोश होना कोई गलत बात नहीं है लेकिन आवेश और जोश भी यदि एक रणनीति के तहत किया जाए तो विफलता का नहीं सफलता का साधन बन सकता है लेकिन हम तो हम है। हमारा आवेश और रणनीति तो सदैव आपने सामने होने पर ही शोभा पाने का भ्रम पाले रहना चाहते हैं।

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान
स्प्रिंग बोर्ड
Spring Board
Springboard Academy, Main Riddi Siddi choraha, Opposite Bank of Baroda, Gopalpura bypass Jaipur
website : www.springboardindia.org

क्षत्रिय कर्मचारी कल्याण परिषद का स्नेहमिलन

क्षत्रिय कर्मचारी कल्याण परिषद जालोर का दो दिवसीय स्नेहमिलन 5 व 6 मई को प्रसिद्ध देवी मंदिर सुंधा माता में संपन्न हुआ। 5 मई की शाम को पंजीयन के बाद खुली चर्चा का आयोजन किया गया जिसमें अनेक समाज विषयक चर्चाएं हुईं। 6 मई को प्रातःकालीन सत्र में शिक्षा, समाज के संस्थान, समाज की दशा एवं दिशा, सामाजिक संस्थाओं में कर्मचारियों की सहभागिता आदि विषयों पर चर्चा की गई। समापन समारोह में पूर्व जिला कलक्टर कर्णसिंह राठौड़, रानीवाड़ा विधायक नारायणसिंह देवल, भाजपा जिलाध्यक्ष रविन्द्रसिंह देबावास, जालोर उपखण्ड अधिकारी राजेन्द्रसिंह सिसोदिया, रानीवाड़ा उपखण्ड अधिकारी हनुमानसिंह राठौड़, आहोर प्रधान राजेश्वरी कंवर, नव चयनित आरपीएस जेठूसिंह कुसीप आदि लोगों ने अपने विचार रखे। नई कार्यकारिणी का गठन किया गया जिसमें विक्रमसिंह रातड़ी को अध्यक्ष एवं जब्बरसिंह देवड़ा को सचिव नियुक्त किया गया। स्नेहमिलन में नवचयनित एवं सेवानिवृत्त कर्मचारियों का बहुमान किया गया।

भजन किसका करें? - 5

महाकुम्भ के अवसर पर चण्डीद्वीप (हरिद्वार) में दिनांक 10.04.1983 ई. की जनसभा में परमपूज्य स्वामी श्री अड़गड़ानन्दजी का प्रवचन। 'भजन किसका करें' नामक छोटी सी पुस्तक में संग्रहित है। उसी पुस्तक को धारावाहिक रूप से यहां छापा जा रहा है। प्रस्तुत है गतांक से आगे का भाग।

(ठ)

ठीक इसी प्रकार की पूजा माता कौशल्या ने की थी। राम का राज्याभिषेक सुनकर वे आनन्दमग्न हो गईं, पूजा-गृह में चली गईं। **'पूजीं ग्रामदेबि सुर नागा। कहेउ बहोरि देन बलिभागा।।'** (2/7/5)- उन्होंने ग्रामदेवियों, देवताओं और नागों का विशाल आयोजन (वैभव) के साथ पूजन किया। उन्हें बलि चढ़ाने की मनौती मानी कि यदि हमारा कार्य सिद्ध हो गया तो आप सबको बलि-भोग दूंगी।

अभी तक देवताओं को राज्याभिषेक की सूचना नहीं थी, किन्तु ग्रामदेवियों को कौशल्या द्वारा इसका पता चला तो उन्होंने देवताओं को और देवताओं ने इन्द्र को सूचना दी। वे तुरन्त सरस्वती के पास गए।

सारद बोलि बिनय सुर करहीं। बारहिं बार पाय लै परहीं।।
बिपति हमारी बिलोकि बड़ि, मातु करिअ सोइ आजु।
रामु जाहिं बन राजु तजि, होइ सकल सुरकाजु।। (2/11)

हे माता! हमारे ऊपर बड़ी विपत्ति आ पड़ी है। आप ऐसा कुछ कीजिए कि राम वन चले जाएं और देवताओं का काम हो जाए। प्रार्थना-पत्र दिया था कौशल्या ने कि हमारा कार्य पूर्ण हो जाए, लेकिन देवताओं ने कहा कि माता! हम देवताओं का कार्य हो जाय। उनको कर्म के सहारे छोड़िए। आप देवताओं का हित देखिए।

सरस्वती बोलीं, **'किसी शुभ कार्य में विघ्न डलवाते तुम्हें शर्म नहीं आती। राम के वन जाने से उन्हें कितना कष्ट होगा? अवध अनाथ हो जाएगा, लोग मुझे क्या कहेंगे?'** देवता विनय करते ही रह गए - **'जीव करम बस सुख दुःख भागी। जाइअ अवध देव हित लागी।'** (2/11/4) अयोध्या वालों की चिन्ता आप क्यों करती हैं? वे तो जीव हैं। कर्म के अनुरूप सुख-दुःख भोगते ही रहते हैं, उन्हें भोगने दें और देवताओं के हित के लिए (कौशल्या के हित के लिए नहीं) कौशलपुर जाएं। जबकि उन्हीं देवताओं की पूजा कौशल्या ने की थी। ऐसे देवताओं से आप कौन-सी आशा लगाए बैठे हैं? आप उसकी पूजा क्यों नहीं करते जिसके लिए गोस्वामीजी ने बल दिया है, जिसका नाम **'मेटत कठिन कुअंक भाल के,'** जिसकी आराधना से कर्मों का बन्धन कट जाता है।

सरस्वती को हिचकते देख देवता बार-बार उनके चरणों में गिरकर निवेदन करने लगे- **'बार-बार गहि चरन संकोची। चली बिचारि बिबुध मति पोची।।'**(2/11/5) बेचारी संकोच में पड़ गई। रास्ते भर विचार करती रही कि देवताओं की बुद्धि कितनी खोटी है। **'ऊंच निवासु नीच करतूती। देखि न सकहिं पराइ बिभूति।'** (2/11/6)- इनका निवास बहुत ही ऊंचा है लेकिन करनी बड़ी खोटी है। ये किसी की वृद्धि नहीं देख सकते। जिनमें इतनी ईर्ष्या है, जलन है, क्या यही आपके आदर्श हैं?

हरषि हृदयं दसरथ पुर आई।
जनु ग्रह दसा दुसह दुखदाई।। 2/11/8)

देवताओं की माता सरस्वती अयोध्या में आ रही थी। कितना सौभाग्य था अवधवासियों का। किन्तु गोस्वामीजी कहते हैं-नहीं, **'जनु ग्रह दसा दुसह दुखदाई।'**- जैसे विपत्ति का पहाड़ ही टूट पड़ा। कहते हैं शनि सबसे दुष्ट ग्रह है, जो साढ़े सात वर्ष तक कष्ट देता है किन्तु सरस्वती तो चौदह साल की दुर्दशा लेकर आई। राम-कल्याण स्वरूप थे, उनका क्या कल्याण करेंगी? वे तो देवताओं का भी कल्याण करने आए थे। पूजा की थी कौशल्या ने, उसे क्या मिला? जीवन भर वैधव्य और दुःख।

नामु मन्थरा मन्दमति, चेरी कैकइ केरि।
अजस पेटारी ताहि करि, गई गिरा मति फेरि।। (2/12)

मन्थरा नाम की एक मन्दबुद्धि दासी थी, उसके मस्तिष्क में प्रवेश कर उसकी बुद्धि को विकृत कर सरस्वती लौट गई। आप ध्यान दें कि बुद्धिमान् और विवेकी लोगों पर इन देवी-देवताओं का प्रभाव नहीं पड़ता। केवल मन्दबुद्धि वाले ही देवी-देवताओं से प्रभावित होते हैं। देवी-देवताओं का ऐसा ही चरित्र उस समय देखने को मिलता है जब भरतजी श्रीराम को लाने चित्रकूट जाते हैं। देवता प्रयास करते हैं कि राम और भरत का मिलन ही न हो। इनके कुत्सित चरित्र की पराकाष्ठा भरत-राम सम्वाद के अवसर पर देखकर मानसकार कहते हैं- **'मघवा महा मलीन, मुए मारि मंगल चहत।' (2/301)**- इन्द्र कितना मलिन है कि पहले से ही दुःखी अयोध्या और जनकपुर के निवासियों को और भी कष्ट दे रहा है मानो मरे हुए को मारकर अपना मंगल चाहता है।

कपट कुचालि सींव सुरराजू। पर अकाज प्रिय आपन काजू।।
काक समान पाक रिपु रीती। छली मलीन कतहुं न प्रतीती।।
(2/301/1-2)

देवराज इन्द्र कपट और कदाचार की सीमा है। उसे पराई हानि और अपना लाभ ही प्रिय है। ऐसे देवताओं से आप लाभ की आशा करते हैं? उस सभा में भी देवताओं ने बुरे विचार, कपट, भय और उच्चाटन का प्रवेश करा दिया। यही उनकी देवमाया है। यही गुण आप उनसे सीख सकते हैं। इस देवमाया के शिकार कौन-कौन हुए?-

भरतु जनकु मुनिजन सहित, साधु सचेत बिहाइ।
लागि देवमाया सबहि, जथा जोगु जनु पाइ।। (2/302)

भरतजी, जनक, मुनि लोग, मंत्री लोग, साधु-सन्त और बुद्धिमान् इतने लोगों को छोड़कर अन्य सभी पर, जिसका जैसा बुद्धिस्तर था उस पर वैसे ही देवमाया लग गई। स्पष्ट है कि केवल मन्दबुद्धि वालों पर ही देवताओं का प्रभाव चल पाता है।

सरस्वती मन्थरा के पास आई तो मन्थरा को क्या मिला? सरस्वती की कृपा से ही मन्थरा की बुद्धि विकृत हो गई। वह अनाप-सनाप सोचने लगी। षड्यन्त्र का सूत्रधार उसे बनना पड़ा और अन्त में लात खानी पड़ी।

कूबर टूटेउ फूट कपारू।
दलित दसन मुख रुधिर प्रचारू।। (2/162/5)

उसका कूबड़ टूट गया, कपाल फट गया, दांत टूट गए, मुंह से खून बहने लगा। इतने पर भी उसकी दुर्दशा का अन्त नहीं हुआ, उसका झोंटा पकड़-पकड़ कर घसीटा गया। जिसके कण्ठ में देवताओं की माता सरस्वती बैठ गई हों उसका सम्मान बढ़ जाना चाहिए था, किन्तु वह ऐसी अभागन निकली कि इसके पश्चात् सम्पूर्ण रामायण में उसका नाम तक नहीं आया और आज तक कोई भी अपनी कन्या का नाम मन्थरा रखने का साहस नहीं जुटा पाता। मन्थरा तो एक प्रतीक है, उन मन्दबुद्धि वालों की प्रतिनिधि है जो देवी-देवताओं की पूजा करते आए हैं। इसका परिणाम चित्रित कर गोस्वामीजी आपको कौन-सा सन्देश दे रहे हैं? क्या आपने कभी विचार किया कि पूजनीय कौन है?

(ड)

रामचरितमानस में सरस्वती का प्रयोग तीन अवसरों पर दिखाया गया है। एक तो इसी मन्थरा-प्रसंग में। दूसरा अवसर तब आया जब देवताओं ने भरत की बुद्धि विकृत करने की प्रार्थना की, जिससे देवताओं का परिवार सुखी रहे। किन्तु सरस्वती बिगड़ गई कि हजार नेत्र रखकर भी तुझे सुमेरु पर्वत नहीं दिखता? कौन-सा सुमेरु था भरत के भीतर? **'भरत हृदयं सियराम निवासू। तहं कि तिमिर जहं तरनि प्रकासू।' (2/294/7)** भला वहां भी कहीं अन्धकार जाता है, जहां सूर्य का भलीभांति प्रकाश है? तो भरत में कौन-सा प्रकाश है? भरत के हृदय में राम और सीता का निवास (प्रकाश) है। वहां मेरी कपट और चतुराई नहीं चलेगी। कौन है अन्धकार? देवता। प्रकाश क्या है? एक परमात्मा। इस स्थल से दूसरी बात यह भी स्पष्ट होती है कि जिसके हृदय में भगवान का निवास है, देवता उसका कुछ बिगाड़ नहीं सकते हैं। अतः मन-क्रम-वचन से आप एक परमात्मा के प्रति समर्पित हो जाएं। यदि आप उन्हें हृदय से देखेंगे तो हृदय के स्वामी भी आपको देखेंगे, आपकी रक्षा की जिम्मेदारी अपने हाथ में ले लेंगे।

तीसरे अवसर पर हम सरस्वती को कुम्भकर्ण के पास जाते देखते हैं। उसकी तपस्या से सन्तुष्ट होकर ब्रह्मा वर देने पहुंचे। ब्रह्मा ने विचार किया कि यह दुष्ट कुछ भी न करे, केवल बैठकर भोजन ही मात्र करे तो यह संसार उजड़ जाएगा, अतः **'सारद प्रेरि तासु मति फेरी। मांगेसि नींद मास षट केरी।।(1/176/8)'** सरस्वती को बुलाया, उसकी बुद्धि विकृत करा दी और छह महीने की नींद मांग बैठा। कुम्भकर्ण में सरस्वती का प्रवेश उसकी मृत्यु का कारण बना। देवताओं की पूजा से कौन-सा कल्याण और किसका हो गया?

(ढ)

वर्तमान समय में समस्त देवताओं में से तीन देवता अधिक श्रेष्ठ माने जाते हैं- ब्रह्मा, विष्णु और महेश। महाराज मनु घर-द्वार छोड़कर तपस्या करने नैमिषारण्य पहुंचे और चिन्तन में लग गए। उनका लक्ष्य क्या था? वे उपासक किसके थे? वे मन-ही-मन विचार कर रहे थे- **'संभु बिरंचि विष्णु भगवाना। उपजहि जासु अंस तें नाना।' (1/143/6)** वे भगवान जिनके अंशमात्र से अनेकों ब्रह्मा, विष्णु और शंकर पैदा होते हैं, **'ऐसेउ प्रभु सेवक बस अहई।' (2/143/7)**- ऐसे भगवान भी सेवक के वश में होते हैं, सेवक के लिए उपलब्ध रहते हैं तो मैं उन्हीं का भजन करूंगा। वे मेरी अभिलाषा पूरी करेंगे। मनु चिन्तन में रत हो गए। साधन में कुछ वेग आया, साधना कुछ सुदृढ़ हो चली, तहां देवता लोग पहुंचने लगे-

बिधि हरि हर तप देखि अपारा। मनु समीप आए बहुबारा।।
मांगहु बर बहु भांति लोभाए। परमधीर नहिं चलहिं चलाए।।
(1/144/2-3)

ब्रह्मा, विष्णु और महेश सभी लोग पहुंचे। मनु को पहले से ज्ञात न होता तो वे भटक जाते। वह जानते थे कि ऐसे अनेकों ब्रह्मा, विष्णु और शंकर उन भगवान के अंशमात्र हैं। इसलिए मनु ने उनकी ओर ध्यान ही नहीं दिया। यह भी नहीं कहा कि देव! हमारा अहोभाग्य कि आपने दर्शन दिया। किन्तु ये देवता भी इतने निघरघट थे कि स्वाभिमान खोकर मनु के समीप बार-बार पहुंचते रहे। लगता है विघ्न डालना ही उनका उद्देश्य था। वे मनु का कल्याण करने नहीं गए थे, कुछ दे नहीं रहे थे, प्रलोभन दे रहे थे- **'बहु भांति लोभाए'**। लोभ भी मोह की एक प्रबलधारा ही है- **'काम क्रोध लोभादि मद, प्रबल मोह के धारि।'**- मोह की ही सेना है, इसलिए मनु ने उधर ध्यान नहीं दिया। चिन्तन में लगे ही रह गए। **'अस्थिमात्र होइ रहे सरीरा। तदपि मनाग मनहिं नहिं पीरा।' (1/144/4)**- हड्डियों का कंकाल मात्र रह गया, फिर भी मन में लेश मात्र पीड़ा नहीं थी। वे प्रसन्न थे, उनकी लव लगी थी और चिन्तन सन्तोषजनक हो रहा था।

भगवान ने देखा कि यह मन-क्रम वचन से मेरे आश्रित है, इसका मन सिमट चुका है, तहां उन्होंने आकाशवाणी दिया कि वर मांगो! वर मांगन को कहा, तो मनु ने मांगा-

जो सरूप बस सिव मन माहीं। जेहि कारन मुनि जतन कराहीं।।
जो भुसुण्डि मन मानस हंसा। सगुन अगुन जेहि निगम प्रसंसा।।
देखहिं हम सो रूप भरि लोचन। कृपा करहु प्रनतारति मोचन।।
(मानस, 1/145/4-6)

मनु शंकर जी के दर्शन से सन्तुष्ट नहीं थे। वे बार-बार आए भी परन्तु उनसे कुछ नहीं मांगा। यद्यपि भगवान शिवजी तत्त्व में स्थित तत्त्वस्वरूप महापुरुष थे, पूर्ण प्राप्ति वाले थे, किन्तु केवल उनका दर्शन करके रह जाना, राह न चलना ठीक नहीं है। शंकर जी के हृदय में जो अनुभूति है उसे स्वयं चलकर प्राप्त करना मनु का लक्ष्य था। मनु जानते थे कि आचरण करके ही पाने का विधान है। किसी पहलवान को हाथ जोड़ने मात्र से पहलवान नहीं बन सकते। चिकित्सक के दर्शन मात्र से रोग-निवृत्ति नहीं होगी।

महात्मा बुद्ध भी अपने शिष्यों से कहा करते थे कि मैंने जो उपदेश दिया है, यदि आप उस पर चलते हो तो दूर रहकर भी मेरे समीप ही हो और यदि आचरण में नहीं ढालते तो मेरे समीप रहने से, दर्शन करने से भी कोई लाभ नहीं, पास रहकर भी बहुत दूर रहोगे। इसलिए आचरण करें।

मनु जानते थे कि भगवान शंकर सही हैं फिर भी उनसे कुछ नहीं मांगा, लेकिन जब भगवान से आकाशवाणी दिया तो वही मांगा, जो शंकर के हृदय में था। 'जेहि कारन मुनि जतन कराहीं।'- जिसके लिए मुनि लोग यत्न करते हैं। आजकल किसी मुनि के ऊपर विन्ध्यवासिनी आती है तो किसी के ऊपर हनुमान जी, कोई कहता है यक्षिणी सिद्ध कर रहे हैं- ये सभी मुनि नहीं हैं। वह मुनि अभी मुनि नहीं है जो उस परमतत्त्व परमात्मा के लिए यत्न न करता हो। अभी वह बहका हुआ है, प्रत्याशी है।

मनु की कामना पर भगवान प्रकट हुए- **'बिस्बबास प्रगटे भगवाना।' (1/145/8)** कौन से भगवान? **'हरि ब्यापक सर्बत्र समाना।'**- जैसे शिव ने कहा था। **'जेहि जाने जग जाई हेराई।'** मनु ने देखा, जहां विश्व था सर्वत्र भगवान का वास दिखाई पड़ा। जहां भी दृष्टि पड़ी, पत्थर-पानी में- सब में उस प्रभु का स्वरूप छा गया। स्वयं भी खो गए, विश्व भी खो गया, मनु का जीव-संस्कार भी खो गया। जहां पहले विश्व दिखाई पड़ता था, भगवान सर्वत्र दिखाई पड़ने लगे।

'ॐ ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्।'- इसी अवस्था को जिन-जिन महापुरुषों ने पाया, सबने इसी निर्णय को दोहराया कि जो कुछ दिखाई-सुनाई पड़ता है सर्वत्र ईश्वर का वास है, फिर भी हमें नहीं दिखता, कारण क्या है? **'जेहि जाने जग जाइ हेराई। जागे यता स्वप्न भ्रम जाई।'**, **'अस प्रभु हृदय अछत अविकारी।'** वह राम केवल भक्त के हृदय की वस्तु है, बाहर नहीं। आपके हृदय में भी वह है, किन्तु प्रसुप्त है। उसे जानने के लिए एक परमात्मा में श्रद्धा, उस परमात्मा को आपके हृदय से जागृत करा देने वाले महापुरुष का सान्निध्य अपेक्षित है। बाहर न कोई देवी है न देवता। बाहर की वस्तुएं पूजोगे तो कल्याण कदापि नहीं होगा और वस्तु भी कभी नहीं पाओगे- रामायण का यही निर्णय है। **(क्रमशः)**

अतियों के बीच सम्यक का क्षरण

ज्यों ही भारत में चुनाव आता है देश के वातावरण में कुछ अतिवादी ताकतें सक्रिय होती हैं। ये अतिवादी ताकतें धर्म के नाम पर कुछ अतिवादी बयान देते हैं, कुछ अतिवादी कृत्य करते हैं और परस्पर एक दूसरे के विरोधी लगने वाली अतिवादी शक्तियां एक-दूसरे को मजबूत करती हैं। आजादी के समय से ही देश अतिवाद की भेंट चढ़ता गया और अतिवाद के प्रभाव में देश का सम्यक चरित्र आहत होता रहा। अति चाहे अच्छी हो या बूरी वह अंतिम रूप से सम्यकता को हानि ही पहुंचाती है। उदाहरण के लिए आजादी के बाद गांधीजी के अति उदारवाद ने गोडसे जैसी अनुदार अति को जन्म दिया और परिणाम स्वरूप देश को उस समय का अपना बहुमूल्य व्यक्तित्व खोना पड़ा। इससे पहले भी देश में पनपी हर अतिवादी ताकत दूसरी अति की प्रतिक्रिया थी। आजादी के बाद पनपी व्यवस्था में भी तृष्टिकरण के नाम पर अतिवाद पनपा और उसकी प्रतिक्रिया में फिर अतिवाद पनपा। औद्योगिकरण के नाम पर जंगलों की अति क्षति की गई, आदिवासियों की संपत्ति उनसे छीनी गई और इसी अति की प्रतिक्रिया में नक्सलवाद के रूप में दूसरी अति पनपी। आज देश का बड़ा भाग इस अति से पीड़ित है। इसी प्रकार राजनीति के क्षेत्र में विभाजन के बाद शेष बचे मुसलमानों का कांग्रेस एवं संबद्ध पार्टियों द्वारा अति के स्तर पर तुष्टिकरण किया गया। इस तुष्टिकरण के परिणाम स्वरूप देश में पनपा सम्यक नेतृत्व हासिये पर धकेला जाता रहा और इस तुष्टिकरण की विगत वर्षों में इतनी अधिक अति हुई कि परिणाम स्वरूप हिन्दुत्व का चोला ओढे दूसरे अति सत्तासीन हुई और तब से गाय, गोबर, जिन्ना आदि विषयों पर चुनावों के समय धड़ेबंदी के लिए यह अति सक्रिय होती रहती है। परिणाम स्वरूप स्वाभाविक रूप से सम्यक सोच रखने वाला सामान्य जनमानस स्वयं को ठगा महसूस करता है। यदि देश का सामान्य जनमानस अतियों को पसंद करता तो भाजपा के अतिवादी नेताओं को सत्ता के शीर्ष पर पहुंचने में इतना समय नहीं लगता। यदि देश का सामान्य जनमानस अतिवादी होता तो ओवेसी की पार्टी एक दो सीटों तक सिमट कर नहीं रहती। लेकिन वास्तव में देश का जनमानस अतिवाद को पसंद नहीं करता बल्कि यह सम्यक को पसंद करता है और जब तक कोई भी अति अपनी सीमाएं पार नहीं करती तब तक वह अपनी सम्यकता को छोड़कर किसी अति के संग नहीं होता लेकिन जब एक अति अपनी सीमाएं पार करती है तो दूसरी अति की ओर स्वाभाविक रूप से जनमानस का सम्यक सोच झुकता है और परिणाम स्वरूप पहली अति चित्त आती है। इसलिए सभी अतियों को नेतृत्व देने वाले लोगों को सोचना चाहिए कि जनमानस की स्वाभाविक सोच सम्यक है, वह किसी अति को पसंद नहीं करती। यदि ऐसा नहीं होता तो एक ही प्रकार की अति देश में सदा के लिए सत्ता के शीर्ष पर बनी रहती। लेकिन वस्तुस्थिति यह है कि यह राष्ट्र सम्यक सोच वाला राष्ट्र है, जब तक कोई अति अपनी सीमाएं नहीं लांघती, उसे सहन भी कर लेता है लेकिन जब इसकी सम्यकता की सीमाएं टूटती है तो अतियां बह जाया करती हैं इसलिए आज दलित के नाम पर, आरक्षण के नाम पर, सवर्ण के नाम पर, जाति के नाम पर, धर्म के नाम पर, विकास के नाम पर अति करने वालों को सोचना चाहिए कि वे देश के सामान्य जनमानस की सम्यक सोच की परीक्षा न लें, उसकी सहनशीलता को कमजोरी नहीं समझें, क्योंकि वह जब क्षरित होती है तो अतियां भी समाप्त हो जाती है।

जिन्दगी : एक उपहार

जिंदगी मेरे लिए बहुत छोटी है,
क्योंकि मुझे कुछ पाना है।
मैंने हंसना सीखा मैं नहीं जानती रोना,
मेरे जीवन के सुख को मैं नहीं चाहती खोना।
आई बहुत कठिनाइयां मेरे जीवन पर,
लेकिन मुझे पूरा विश्वास था परमात्मा पर।
जीवन में पीछे देखा तो अनुभव मिला,
और आगे देखा तो आशा मिली।
माथे पर खिंची लकीरें बनाती मेरी किस्मत उज्ज्वल,
और मैं नहीं करती दिलों पर वार
जो डाल देती रिश्तों में दरार।
मैंने सीखा करना दूसरों का आदर और सम्मान,
हमेशा हर एक बात में ढूंढा अच्छा ज्ञान।
हमेशा सोचा करुंगी, न करुंगी ऐसा काम,
जिससे नीचे हो जाए मां-बाबा का नाम।
ठानी थी मैंने भी अपने मन में,
बदलूंगी अपने सपने को हकीकत में।
लक्ष्य को पाने में मिलती सबकी सहायता,
और इसी से आत्मविश्वास का चक्र बनता।
देखती अपने सपने की चांदनी को कि कब वो चमकेगी,
मुश्किलों को हल करते-करते कब मुझे राहत मिलेगी।
हारी न कभी चलती रही इस पथ पर,
क्योंकि मुझे जाना था एक दिन उस मुकाम पर।
आई वो घड़ी जब हुई मैं बड़ी,
खड़ी होकर पूरे संसार से लड़ी।
और पहुंच गई लक्ष्य के शिखर पर बन गई मैं अफसर,
आ गया वो दिन जब मुझे मिला सम्मानित होने का अवसर।
पूछा मुझसे क्या है तुम्हारा राज और क्या था तुम्हारे पास,
बता दिया मैंने भी माता-पिता का साथ परमात्मा का वास।
कठिनाइयों का हल इनसे बड़ा न कोई होगा मेरे लिए,
हे ईश्वर! है जगह दिल में तेरे बाद इनके लिए।
जिंदगी ने भी मुझे बांहे फैलाकर बुला लिया, आजा परी,
जिंदगी में कभी खुशी कभी गम
पर आए गम तो न कहना अपनी मजबूरी।

पूजा तंवर, झुंझुनूं
(दुर्गा महिला विकास संस्थान, सीकर)

बनासकांठा में सम्पर्क जारी

संघ के बनासकांठा प्रांत में विगत समय से चल रहा सम्पर्क अभियान निरन्तर जारी है। विगत 5 मई को वरिष्ठ स्वयंसेवक अजीतसिंह कुणघेर के नेतृत्व में एक दल ने बड़गाम तहसील के कोदराम गांव में सम्पर्क कर स्वजातीय बंधुओं की बैठक आयोजित की। सांघिक परम्परानुसार प्रारम्भ हुई बैठक में उपस्थित समाज बंधुओं को पूज्य तनसिंह जी, श्री क्षत्रिय युवक संघ का परिचय दिया गया एवं संघ की कार्य प्रणाली के बारे में विस्तार से समझाया गया। इसी क्रम में 6 मई को पीलुडा गांव में सम्पर्क कर बैठक का आयोजन किया गया। समाज विषयक चर्चा के अलावा उ.प्र.शि. को लेकर विशेष चर्चा की गई एवं 10 स्वयंसेवकों ने उ.प्र.शि. में आने की सहमति दी।

गणपतसिंह राठौड़ को पितृशोक

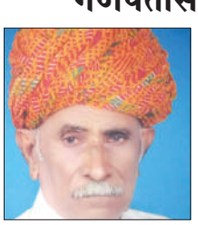

जयपुर की वीर दुर्गादास राठौड़ स्मृति समिति के अध्यक्ष गणपतसिंह राठौड़ के पिता सवाई सिंह राठौड़ का 25 अप्रेल को देहावसान हो गया। ये मूलतः नागौर जिले के भवादिया गांव के निवासी हैं।

(पृष्ठ एक का शेष)

जीवन का...

यदि हम अपने आपको बदल सके तो संसार हमारे से प्रभावित होगा और परिणाम स्वरूप वह बदलने भी लगेगा। संघ प्रमुख श्री ने कहा कि इस संघर्ष में वही विजय होता है जिसको परमेश्वर का साथ मिलता है। इसके लिए अंतःकरण की शुद्धि आवश्यक है। इसके लिए सद्कर्म आवश्यक है और स्वधर्म पालन सबसे बड़ा सद्कर्म है जिसका अभ्यास इन ग्यारह दिनों में करवाया जाएगा। आप सभी सच्चे क्षत्रिय बनें, श्रेष्ठ मनुष्य बनें, आपमें सच्ची राष्ट्रीय भावना पनपे, सच्ची मनुष्यता पनपे इन्हीं शुभकामनाओं के साथ संघ आपका इस शिविर में स्वागत करता है।

11 मई से 21 तक चलने वाले इस शिविर में राजस्थान, गुजरात, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, बिहार आदि राज्यों के विभिन्न क्षेत्रों के साथ-साथ दक्षिण में व्यवसायरत प्रवासी राजस्थानी स्वयंसेवक प्रशिक्षण ले रहे हैं। शिविर का संचालन संघ प्रमुख श्री के निर्देशन में संचालन प्रमुख लक्ष्मणसिंह बेण्यांकाबास कर रहे हैं। संघ द्वारा विकसित किए जा रहे शिविर स्थल भारतीय ग्राम्य आलोकायन आश्रम में हो रहे इस शिविर में स्वागत के समय तक 550 शिविरार्थी पहुंच चुके थे।

(पृष्ठ दो का शेष)

जीवनोपयोगी...

9. बायो-टेक्नोलॉजी इंजीनियरिंग : अभियांत्रिकी की यह शाखा जैव प्रौद्योगिकी से संबंधित है तथा इसमें सूक्ष्म जीव प्रबंधन, आनुवांशिकी, जैव रसायन आदि का अध्ययन किया जाता है।

10. सिविल इंजीनियरिंग : यह अभियांत्रिकी की अत्यन्त महत्त्वपूर्ण शाखा है जिसमें आधारभूत संरचना जैसे : सड़क, इमारतें, एयरपोर्ट, सुरंग, पुल, बांध, सीवर व ड्रेनेज सिस्टम आदि के डिजाइन एवं निर्माण का अध्ययन किया जाता है।

11. केमिकल इंजीनियरिंग : इसके अन्तर्गत स्वास्थ्य, औषधि, उद्योग आदि क्षेत्रों में रसायनों के अनुप्रयोग, उत्पाद, सुरक्षित परिवहन आदि में विशेषज्ञता प्राप्त की जाती है।

12. सिरेमिक इंजीनियरिंग : इसके अन्तर्गत अकार्बनिक तथा गैर धात्विक पदार्थों के तापीय एवं रासायनिक प्रविधयों द्वारा निर्माण का अध्ययन किया जाता है।

13. कम्प्यूटर साइंस : कम्प्यूटर प्रोग्रामिंग एवं नेटवर्किंग से संबंधित अभियांत्रिकी शाखा।

14 इलेक्ट्रॉनिक्स एण्ड कम्युनिकेशन इंजीनियरिंग : यह इंजीनियरिंग की सर्वाधिक लोकप्रिय शाखाओं में से एक है। इसका क्षेत्र अत्यन्त व्यापक है तथा इसके अन्तर्गत वैद्युतिकी, कम्प्युटर सिस्टम सूचना एवं संचार तकनीकी आदि का अध्ययन किया जाता है।

15. इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग : इसके अन्तर्गत विद्युतीय उपकरणों के डिजाईन, निर्माण एवं संचालन का अध्ययन किया जाता है। ध्यातव्य है कि **इलेक्ट्रोनिक्स** और **इलेक्ट्रिकल** इंजीनियरिंग की दो भिन्न-भिन्न शाखाएं हैं। इलेक्ट्रॉनिक्स अधिक जटिल एवं व्यापक है, जिसमें निर्णय क्षमता वाले विद्युत सर्किट का अध्ययन किया जाता है जबकि इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग में सामान्य विद्युत सर्किट एवं उपकरणों का अध्ययन किया जाता है।

(क्रमशः)

(पृष्ठ चार का शेष)

जीवन...

यह समय आपके मन को मजबूत करने का समय है, आपकी बुद्धि को तराशने का समय है, आपके शरीर को वज्र बनाने का समय है, अपनी भावनाओं को विवेक के अधीन बनाकर हृदय को ज्ञान से प्रदीप्त करने का समय है। यदि हम ऐसा कर पाएंगे तो ही पूज्य तनसिंह के अनुसार ज्ञान प्रदीप्त हृदय के आंदोलन को अंजाम दे पाएंगे। इससे पूर्व के सभी आंदोलन मात्र छलावा हैं जो बनाते कुछ नहीं, बिगाड़ते ही हैं इसलिए आए जीवन को बनाएं, बिगाड़े नहीं।

केरियर एकेडमी भवन का उद्घाटन

गुजरात की राजधानी गांधीनगर में श्री कच्छ काठियावाड़ राजपूत सेवा समाज द्वारा निर्मित बा श्री दशरथ बा महेन्द्रसिंह परमार राजपूत केरियर एकेडमी भवन का उद्घाटन 6 मई को संपन्न हुआ। गुजरात भर के राजपूत युवाओं एवं युवतियों को प्रशासनिक सेवाओं की तैयारी करवाने के लिए निर्मित इस भवन का शिलान्यास एक वर्ष पूर्व हुआ तब ही इसे एक वर्ष में पूरा करने का संकल्प लिया गया था जो 6 मई को पूर्ण हुआ। इससे पूर्व केरियर मार्गदर्शन का यह कार्य गांधीनगर के पाटनगर क्षेत्र में एक छोटे से स्थान पर चल रहा था। उल्लेखनीय है कि यह संस्था विगत वर्षों से इस प्रकार की तैयारी करवाने का कार्य करवा रही है और अब तक हजारों समाज बंधु इसके माध्यम से विभिन्न प्रशासनिक सेवाओं में चयनित हुए है। गुजरात भर के राजपूतों के सहयोग से लगभग 7 करोड़ रुपए की लागत से बने इस भवन में बड़ा हॉल, कान्फ्रेन्स रुम, लाईब्रेरी, कम्प्यूटर लेब, आवासीय कमरे, डाइनिंग हॉल आदि हैं। उद्घाटन समारोह में दशरथ बा महेन्द्रसिंह परमार, अनिरुद्ध सिंह जाडेजा (एमडी जीटीपीएल), डॉ. सी.जे. चावड़ा, पूर्व मुख्यमंत्री शंकरसिंह वाघेला, राज्य सरकार में मंत्री भूपेन्द्रसिंह चुड़ासमा, प्रदीपसिंह जाड़ेजा आदि गणमान्य लोग उपस्थित थे। संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक अजीतसिंह धोलेरा की भी गरिमामय उपस्थिति रही। इस अवसर पर घर पर रहकर तैयारी करने वाले युवकों एवं युवतियों के लिए skkrss.org वेबसाइट भी लांच की गई।

राजपूत प्रतिभा खोज परीक्षा की तैयारियां

आगामी 10 जून को राजपूत शिक्षा कोष ट्रस्ट द्वारा आयोजित होने वाली राजपूत प्रतिभा खोज परीक्षा की तैयारी बाबत जिला स्तर पर बैठकें कर अधिकाधिक विद्यार्थियों को परीक्षा में शामिल करवाने का अभियान चलाया जा रहा है। एक लाख रुपए से कम वार्षिक आय वाले परिवारों के राजपूत विद्यार्थियों हेतु आयोजित इस परीक्षा में सफल विद्यार्थियों की एक निश्चित संख्या को ट्रस्ट के खर्चे एवं समाज के लोगों के संस्थानों के माध्यम से निःशुल्क पढ़ाया जाएगा।

राजश्री करणोत को 5 गोल्ड

बागावास निवासी राजश्री करणोत ने जयपुर में 26 से 29 अप्रेल तक आयोजित महावीर टोप शूटिंग प्रतियोगिता में राजमाता कृष्णा कुमारी गर्ल्स स्कूल की ओर से खेलते हुए 14 वर्ष, 18 वर्ष, 21 वर्ष व दो ओपन सेट वर्ग में गोल्ड मेडल हासिल किए हैं।

सर्व राजपूत समाज की प्रेसवार्ता

संभाग मुख्यालयों पर प्रेस वार्ता कर सरकार की वादाखिलाफी उजागर करने के अभियान के तहत सर्व राजपूत समाज संघर्ष समिति की बीकानेर में 6 मार्च को प्रेस वार्ता रखी गई जिसमें राजपूत सभा जयपुर के अध्यक्ष गिर्राजसिंह लोटवाड़ा, क्षत्रिय सभा बीकानेर के अध्यक्ष बजरंगसिंह रोयल, रावणा राजपूत समाज के प्रदेश उपाध्यक्ष गजेन्द्रसिंह सांखला, दुर्गसिंह खींवसर, कर्ण प्रतापसिंह, हनुमानसिंह आदि के अलावा बीकानेर के वरिष्ठ सामाजिक कार्यकर्ताओं ने भाग लिया।

प्रेस वार्ता में आनन्दपाल मुद्दे में सरकार द्वारा सामाजिक नेताओं पर झूठे मुकदमें लगाने एवं उन्हें सीबीआई को सौंपने, चतुरसिंह प्रकरण में सीबीआई जांच के आदेश न होने, सामाजिक संस्थाओं से टेक्स वसूलने, सामराऊ प्रकरण में दोषियों पर कार्रवाई न करने, कीर्ति स्तंभ पर शहीदों की यशोगाथा न लिखने आदि विषयों को लेकर नाराजगी व्यक्त की गई एवं सरकार पर इस बाबत किए गए वादों को न निभाने का आरोप लगाया गया। प्रेस कांफ्रेंस में बताया गया कि इस अभियान के तहत आगामी 13 मई को अजमेर, 20 मई को कोटा, 27 मई को उदयपुर एवं 1 जून को भरतपुर संभाग मुख्यालय पर इसी प्रकार की प्रेस वार्ता कर समाज तक संदेश पहुंचाया जाएगा। इसके बाद 3 जून से स्वाभिमान यात्रा निकाली जाएगी। प्रेस वार्ता में भाजपा प्रदेशाध्यक्ष मामले में समाज के विरुद्ध माहौल बनाने के प्रयास की निंदा की गई।

बेटी के आग्रह पर शराब मुक्त शादी

सामाजिक रुढ़ियों एवं नशे की प्रवृत्ति के विरुद्ध जागृति का असर समाज में सर्वत्र दृष्टिगोचर होने लगा है। एक तरफ जहां प्रदर्शन की चाह से प्रेरित लोग रुढ़ियों को खींचे चले जा रहे हैं वहीं कुछ जागरुक लोग साहस पूर्वक इन्हें नकार कर अनुकरणीय उदाहरण बन रहे हैं। ऐसे समाचार यदा-कदा समाचार पत्रों में छपते रहते हैं। ऐसा ही एक समाचार 17 अप्रेल की राजस्थान पत्रिका के मावली क्षेत्र के संस्करण में छपा जिसके अनुसार जावड़ पंचायत के बाड़ा बावड़ी गांव निवासी किशनसिंह की पुत्री संतोष कंवर ने अपने पिता से अपने विवाह में शराब को निषेध रखने का आग्रह किया एवं पहरावणी आदि में होने वाले फिजुल खर्च से बचने का भी निवेदन किया। पिता ने पुत्री के आग्रह को स्वीकार करते हुए शादी के निमंत्रण पत्र में शराब एवं पहरावणी पर प्रतिबंध की सूचना छापकर सगे संबंधियों एवं मेहमानों से सहयोग करने की अपील की। इस प्रकार के प्रयास पूरे समाज में सर्वत्र देखने को मिल रहे हैं, हम सबके प्रोत्साहन से इसमें गति आ सकती है जो समाज के लिए शुभ होगी।

जयपुर में 54 जोड़ों का सामूहिक विवाह

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी 30 अप्रेल तद्नुसार पीपल पूनम के दिन राजपूत सभा जयपुर ने चतुर्थ सामूहिक विवाह सम्मेलन का आयोजन किया। श्री राजपूत छात्रावास प्रांगण जगतपुरा में आयोजित इस विवाह समारोह में 54 जोड़ों का विवाह संपन्न हुआ। राजपूत सभा जयपुर के अध्यक्ष गिरीराजसिंह लोटवाड़ा ने बताया कि युवक-युवतियों के परिवारजनों से नाम मात्र का पंजीयन शुल्क लिया गया, शेष सभी व्यवस्थाएं राजपूत सभा जयपुर द्वारा समाज के सहयोग से निःशुल्क की गई। प्रत्येक युवती को कन्यादान स्वरूप लगभग डेढ लाख का सामान भी समाज के सहयोग से दिया गया। इस अवसर पर स्वामी विवेकानंद गिरी, महावीर सिंह सरवड़ी, सांसद रामचरण बोहरा, पूर्व सांसद नारायण सिंह माणकलाव, मेघराजसिंह रोयल, विक्रमसिंह मूंडरु आदि सामाजिक एवं राजनीतिक लोग उपस्थित रहे।

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org